IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

षड्दर्शनों में व्यक्तित्व की विभिन्न अवधारणाओं का विवेचनात्मक अध्ययन

अंशिका सेन

शोधार्थिनी, योग विज्ञान विभाग

डॉ० कान्ता प्रसाद पोखरियाल

असिस्टेंट प्रोफेसर, योग विज्ञान विभाग

परिचय

मनुष्य जीवन में दुःख के अनुभव के साथ ही उसकी निवृति के उपायों के लिए जिज्ञासा भी उत्पन्न होती है। जीवन यात्रा के चरम लक्ष्य तक पहुँचने के लिए समय–समय पर भिन्न–भिन्न स्तरों में साधक को दुःख निवृत्ति का अनुभव होता रहता है। भारतीय ज्ञान–विज्ञान की परम्परा में व्यक्तित्व सम्बन्धी गहनतम व समग्र विवेचन मिलता है। यहाँ भारतीय मनीषियों व्यक्तित्व शब्द को अंग्रेजी भाषा के श्पर्सनेलिटीश शब्द के अर्थ के रूप में प्रयुक्त नहीं किया गया है। भारतीय मनोविज्ञान की व्यक्तित्व सम्बन्धी मान्यता उसकी मनोदैहिक संरचना से सम्बद्ध न होकर उसके नैतिक एवं आध्यात्मिक पहलू से सम्बन्धित है। इस दृष्टिकोण में समग्र मानवीय व्यक्तित्व आध्यात्मिक आत्माभिव्यक्ति का एक उपयुक्त चक्रायन के रूप में कार्य करता है।

दर्शन शब्द का अर्थ दृ– देखना धातु के कारण अर्थ में ल्यूद प्रत्यय करके बने होता है जिसके द्वारा देखा जाए, ज्ञान प्राप्त किया जाए। ज्ञान प्राप्त करने के सबसे निश्चित और विश्वसनीय उपायों में श्प्रत्यक्षश अर्थात् आँखों से देखना है। श्प्रत्यक्षश के इन्द्रियों के अनुसार पाँच भेद हैं। इनमें भी चक्षुओं से प्राप्त ज्ञान का होना ही सबसे प्रामाणिक होता है। इन सबमें साक्षात् ज्ञान प्राप्ति ही दर्शन शब्द का सर्वोच्च अर्थ होगा। भारतीय मनीषियों ने अपने गहन चिन्तन के बल पर उद्घाटित किया कि संसार दुःखमय है और संसार के दुःख से मुक्ति प्राप्ति ही मनुष्य का चरम लक्ष्य है। इसी चरम लक्ष्य की प्राप्ति के साधन वर्णित करने तथा उनका साक्षात् कराने वाले ग्रन्थ श्दर्शनश कहलाए। किसी ऋषि विशेष की दृष्टि से जिस शास्त्र में परमतत्व के साक्षात्कार का प्रतिपादन तथा उस अनुभूति के साधन मार्ग का निर्देश किया गया हो, वही एक दर्शन शास्त्र है।[प] भारतीय दर्शनों का लक्ष्य है कि मनुष्य जीवन का आधिदैविक, आधिभौतिक व आध्यात्मिक दुःखों से आत्यन्तिक निवृति करना। जो हमारे व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाता है।

पहले भारतीय विवेचक दर्शनों की संख्या 12 मानते थे।[पप] षड्दर्शन के अन्तर्गत रखे जाने वाले दर्शन के नामों पर किन्हीं भी दो विद्वानों का एक मत नहीं है। दर्शनों की संख्या न तो कभी नियत रही है और न नियत की जा सकती है। गुरुगीता में गौतम (न्याय), कणाद (वैशेषिक), कपिल (सांख्य), पतंजलि (योग), जैमिनी (पूर्व मीमांसा) और व्यास (उत्तर मीमांसा) को षड्दर्शनों में गिना जाता है।[पपप] महर्षि दयानन्द ने भी इन्ही दर्शनों का समर्थन किया है। आज सभी विद्वान् उक्त दर्शनों को ही षड्दर्शनों में गिनते हैं।[पअ]

भारतीय दर्शनों में वेद के सिद्धान्तों को अलग–अलग विचारधारा के रूप में प्रस्तुत किया है। इनका मुख्य उद्देश्य है आत्मा का साक्षात्कार कराकर दुःख को निवृति कराना। इसलिए दर्शन ग्रन्थों में वेद, ब्राह्मण, उपनिषद् आदि ग्रन्थों के समान मनुष्य के सामाजिक जीवन की परिचर्या किसी भी रूप में नहीं है। यहाँ केवल मनुष्य आत्मा को श्बद्धश और श्मुक्तश की श्रेणी में रखा गया है। बद्धात्मा और मुक्तात्मा दो ऐसे शब्द हैं जो दर्शन में आत्मा की दो अलग–अलग अवस्थाओं को दर्शाते हैं। बद्धात्मा वह आत्मा है जो माया (भौतिक जगत) के बंधनों में बंधी हुई है। यह आत्मा अज्ञानता और अविद्या के कारण माया के प्रभाव में आती है और इसे लगता है कि यह शरीर और माया का ही एक हिस्सा है। मुक्तात्मा वह आत्मा है जो माया के बंधनों से मुक्त हो गई है। यह आत्मा ज्ञान और विद्या के कारण माया के प्रभाव से मुक्त हो जाती है और इसे अपनी असली पहचान का एहसास होता है। यही बद्धात्मा और मुक्तात्मा रूपी मानुष व्यक्तित्व का वर्गीकरण दर्शनों को सर्वप्रथम मान्य है। अन्य वर्गीकरण भी उक्त वर्गीकरण के आलोक में ही विकसित है।

न्याय दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा– न्याय दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा आत्मा और शरीर के बीच संबंध पर आधारित है। इस दर्शन में आत्मा को शरीर का नियंत्रक माना जाता है और व्यक्तित्व को आत्मा की अभिव्यक्ति माना जाता है।न्याय दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा को समझाने के लिए कई सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है। इनमें से एक प्रमुख सिद्धांत है आत्मा का सिद्धांत। इस सिद्धांत के अनुसार आत्मा एक नित्य और शाश्वत इकाई है जो शरीर का नियंत्रक है।न्याय दर्शन में एक अन्य सिद्धांत है शरीर का सिद्धांत। इस सिद्धांत के अनुसार शरीर एक ऐसी इकाई है जो आत्मा के नियंत्रण में है।

न्याय दर्शन में ज्ञान के अधिकरण को आत्मा कहा गया है। इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख तथा ज्ञानरूप लिंग के द्वारा आत्मा के अस्तित्व का ज्ञान किया जाता है।[अ] इसी को बद्धात्मा कहते हैं। क्योंकि मनुष्य के कायिक, मानसिक और वाचिक बुरे और भले कार्यों से उत्पन्न संस्कार आत्मा में रहते हैं। ये संस्कार ही मरने के बाद दूसरे शरीर में जीवात्मा के साथ प्रवेश कर जाते हैं।

मुक्तात्मा को संसार दशा बद्धात्मा आत्मा को प्राप्त ज्ञान सुख, दुख आदि गुण प्राप्त नहीं होते अर्थात् दुख की पूर्ण निवृति हो जाती है इसी को मोक्ष कहा गया है[अप] यही व्यक्तित्व का उत्कृष्ट प्रकार है।

वैशेषिक दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा– वैशेषिक दर्शन भी न्याय के अनुसार ही आत्मा के श्बद्धश और श्मुक्तश होने की बात करता है। परन्तु जहाँ तक मनुष्य के व्यक्तित्व का सम्बन्ध है वैशेषिक दर्शन में कुछ विशेषता है। वैशेषिक दर्शन में सात पदार्थ माने जाते हैं द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव।[अपप] इनमें कर्म, सामान्य और विशेष के कारण मनुष्यों में अनेक व्यक्तित्व हो सकते हैं। श्विशेषश नामक पदार्थ नित्य है और प्रत्येक जड़ चेतन में उपस्थित रहता है। इसके कारण एक व्यक्ति संसार के सभी व्यक्तियो से अपने को अलग रखता है। कोई एक विशेष केवल एक ही व्यक्ति में पाया जाता है। इस प्रकार वैशेषिक दर्शन के अनुसार व्यक्तित्व के अनन्त प्रकार हैं क्योंकि कोई भी किसी के समान नहीं हो सकता।

सांख्य दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा– सांख्य दर्शन के अनुसार समस्त संसार त्रिगुणात्मक प्रकृति से बना होने के त्रिगुण युक्त है। पुरुष का इससे संयोग के कारण मनुष्य में भी सत्व– रज–तम गुण परिलक्षित होते हैं।[अपपप] इसी कारण सभी मनुष्यों का व्यक्तित्व अलग–अलग होता है। सात्विक व्यक्तित्व में धर्म ज्ञान, वैराग्य तथा ऐश्वर्य है। तामसिक व्यक्तित्व में अधर्म अज्ञान, अवैराग्य तथा अनैश्वर्य होता है।[पग] तथा राजसिक व्यक्तित्व में अभिमान तथा कर्म के प्रति अप्रीति होती है।

योग दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा– योग दर्शन एक मनोवैज्ञानिक दर्शन है और इसमें मनुष्य के इन्द्रियों के आश्रित व्यवहार का विवेचन है। जिसको योग दर्शन में चित् कहा गया है। जबकि चित् की वृत्तियों को क्लिष्ट और अक्लिष्ट[ग] कहकर योगदर्शन बद्ध और मुक्त के सिद्धान्त को ही शब्दान्तर से कहता है परन्तु चित्त की अवस्थाओं का वर्णन करते हुए चित् की पाँच प्रकार की भूमियाँ बताई है– क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। ये पाँचों मनुष्य के व्यक्तित्व को ही प्रकट करती हैं।

क्षिप्त – ऐसे व्यक्तित्व में रजोगुण के प्रभाव से भ्रमयुक्त व विषय भोग का बाहुल्य रहता है।

मूढ़– ऐसे व्यक्तित्व में तमोगुण का प्रभाव क्रोध, निद्रा, तन्द्रा, आलस्य, प्रमाद, शास्त्र विहीन कार्य और मादक द्रव्य सेवन का गुण रहता है।

विक्षिप्त– ऐसे व्यक्तित्व में चित् की चंचलता कभी सतोगुणी कभी रजोगुणी और कभी तमोगुणी रहता है।

एकाग्र– ऐसे व्यक्तित्व में चित् शान्त सत्वगुणयुक्त होता है।

निरुद्ध– ऐसे व्यक्तित्व में योगियों जैसी अवस्था रहती है।

मीमांसा दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा– मीमांसा दर्शन का प्रमुख चिन्त्य विषय कर्म सिद्धान्त है। उसके अनुसार कर्म अपना फल देने में स्वयं समर्थ है। कर्ता द्वारा कृत शुभ कर्म अपनी पुण्यशक्ति से सुख रूपी फल देता है और अशुभ कर्म अपनी फल शक्ति से दुःख रूपी फल देता है। कर्म को इतना महत्वपूर्ण मानने के कारण ही पूर्व मीमांसा को कर्म मीमांसा भी कहा जाता है। कर्म पर आधारित होने पर ही मीमांसा दर्शन में व्यक्तित्व के सम्बन्ध में यही मान्यता है कि श्बद्ध आत्माश में विषय सम्पर्क से ज्ञान, सुख–दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न आदि उत्पन्न होते हैं। मुक्त आत्मा देहेन्द्रिय–विषय–संयोग के विलय होने के कारण आत्मा में ज्ञान और आनंद उत्पन्न नहीं होते है।[गप]

वेदांत दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा– वेदांत दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा आत्मा और परमात्मा के बीच संबंध पर आधारित है। इस दर्शन में आत्मा को परमात्मा का एक अंश माना जाता है और व्यक्तित्व को आत्मा की अभिव्यक्ति माना जाता है।वेदांत दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा को समझाने के लिए कई सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है। इनमें से एक प्रमुख सिद्धांत है ष्आत्मा का सिद्धांतष्।इस सिद्धांत के अनुसार आत्मा एक नित्य और शाश्वत इकाई है जो परमात्मा का एक अंश है।वेदांत दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा को समझाने के लिए एक अन्य सिद्धांत है ष्माया का सिद्धांतष्। इस सिद्धांत के अनुसार माया एक ऐसी शक्ति है जो आत्मा को परमात्मा से अलग करती है।

वेदांत दर्शन में एक ही श्आत्माश की सत्ता मान्य है जब वह माया, अज्ञान, अविद्या की उपाधि वाला होता है। तो जीवात्मा और इससे पृथक होने पर ब्रह्म कहलाता है। यहाँ भी श्मुक्त और बद्धश आत्मा को परिकल्पना ही है।

निष्कर्ष– भारतीय दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा एक जटिल और विविध विषय है। विभिन्न दर्शनों में व्यक्तित्व की अवधारणा को अलग–अलग तरीकों से समझाया गया है। इस पेपर में हमने भारतीय दर्शन में व्यक्तित्व की अवधारणा का विश्लेषण किया है और यह स्पष्ट किया है कि व्यक्तित्व की अवधारणा विभिन्न दर्शनों में अलग–अलग तरीकों से समझाई गई है। उपर्युक्त विवेचन से निष्कर्ष निकलता है कि षड्दर्शन मनुष्य के व्यक्तित्व को परिभाषित नहीं करते। वे मनुष्य की केवल दो कोटियाँ मानते हैं जिसमें संसारस्थ सभी पुरुष श्बद्धश कोटि में आते हैं और कुछ श्मुक्तश है जो अशरीरधारी, संसार की अनिवासी मुक्त आत्मा है। बद्धात्मा माया या अज्ञान के कारण बंधी हुई है, जबकि मुक्तात्मा माया या अज्ञान से मुक्त हो गई है। बद्धात्मा को अपने जीवन में सुख और दुख का अनुभव होता है, जबकि मुक्तात्मा को अपने जीवन में सुख और दुख का अनुभव नहीं होता है। द्धात्मा मुक्तात्मा बनने की प्रक्रिया में है। बद्धात्मा को अपने जीवन में सुख और दुख का अनुभव होता है, लेकिन वह अपने जीवन को नियंत्रित नहीं कर सकता है। बद्धात्मा को अपने जीवन में कई प्रकार के बंधनों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि कर्म, माया, और अज्ञान। लेकिन जब बद्धात्मा इन बंधनों से मुक्त हो जाता है, तो वह मुक्तात्मा बन जाता है।

---

[i] डॉ० उमेश मिश्र, भारतीय दर्शन, पृष्ठ 14

[ii] जगदीश चन्द्र मिश्र, भारतीय दर्शन, पृष्ठ 510

[iii] डॉ० उमेश मिश्र, भारतीय दर्शन, पृष्ठ 17

[iv] सत्यार्थ प्रकाश, तृतीय समुल्लास

[v] न्याय सूत्र– 1/1/11

[vi] डॉ० उमेश मिश्र, भारतीय दर्शन, पृष्ठ 226

[vii] वैशेषिक सूत्र, 1/1/14

[viii] सांख्यकारिका, 1/17, 18

[ix] सांख्यकारिका, 1/23

[x] योगदर्शन, समाधिपाद, 5

[xi] जगदीश चन्द्र मिश्र, भारतीय दर्शन, पृष्ठ 510